CHAPTER 48

SANSKRIT

Doctoral Theses

507. अशोक कुमार

परिभाषेन्दुशेखर की हैमवती टीका का समालोचनात्मक अध्ययन।

निर्देशक : डॉ. श्रीवत्स

Th 18881

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध में नागेशभट्ट के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व के साथ 'परिभाषेन्दुशेखर' का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया गया है। परिभाषाविषयक पूर्ववर्ती एवं उत्तरवर्ती साहित्य का संक्षेप में परिचय प्रस्तुत किया गया है। इसके साथ-साथ परिभाषाओं के उद्‌भव एवं विकास पर भी दृष्टिपात किया गया है। परिभाषाओं का उसके कार्य, स्वरूप एवं प्रकृति के आधार पर विविध परिभाषाविषयक लक्षणों का वर्णन किया गया है। परिभाषाओं के शास्त्रसम्पादकत्व की चर्चा की गई है। हैमवती टीका के सन्दर्भ में बारह परिभाषाओं का समालोचनात्मक अध्ययन किया गया है। इसमें वाचनिक, न्यायसिद्ध तथा मिश्रित परिभाषाओं का समालोचनात्मक अध्ययन किया गया है। परस्पर विरोधी शास्त्रों के तथाकथित बाध्यबाधकभाव के बीच अर्थात् कारण को प्रस्तुत करने वाली परिभाषाओं का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। शास्त्रत्वसम्पादक एवं बाधबीजवाचक परिभाषाओं से अवशिष्ट परिभाषाओं का हैमवती टीका के सन्दर्भ में समालोचनात्मक अध्ययन किया गया है।

विषय सूची

1. आचार्य नागेश और पं. यागेश्वर शास्त्री का व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व 2. परिभाषा-साहित्य, लक्षण एवं महत्त्व 3. शास्त्रत्वसम्पादक परिभाषाओं का अध्ययन 4. बाधबीजवाचक परिभाषाओं का अध्ययन 5. शेषार्थवाचक परिभाषाओं का अध्ययन 5. उपसंहार एवं सन्दर्भ ग्रन्थ सूची ।

508. चन्द्रभूषण

संरचना एवं उपस्थापन की दृष्टि से सरस्वतीकण्ठाभरण और अष्टाध्यायी का तुलनात्मक अध्ययन ।

निर्देशिका : डॉ. शन्नो ग्रोवर

Th 18882

सारांश

संस्कृत-व्याकरण की परिभाषा, महत्त्व तथा प्रयोजन को प्रतिपादित करते हुए उसके उद्‌भव और विकास का विवेचन किया गया है। पाणिनी और उनके शब्दानुशासन तथा भोज और उनके शब्दानुशासन का परिचय दिया गया है। संरचना और उपस्थापन की दृष्टि से सरस्वतीकण्ठाभरण और अष्टाध्यायी का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। व्याकरणद्वय के कारक एवं विभक्ति, कृदन्त, तद्धित, समास प्रभृति विशेष प्रकरणों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। भोज द्वारा सरस्वतीकण्ठाभरण में संकलित अष्टाध्यायी के सकल उपकारक ग्रन्थों यथा परिभाषा पाठ, गणपाठ, उणादि पाठ प्रभृति का अध्ययन किया गया है। सरस्वतीकण्ठाभरण और अष्टाध्यायी के वैदिक व्याकरण का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

विषय सूची

1. संस्कृतव्याकरणशास्त्र : एक परिचय 2. पाणिनि और भोज : एक परिचय 3. संरचना की दृष्टि से सरस्वतीकण्ठाभरण और अष्टाध्यायी का तुलनात्मक अध्ययन 4. प्रकरणदृष्टि से व्याकरणद्वय का तुलनात्मक अध्ययन 5. सरस्वतीकण्ठाभरण में अष्टाध्यायी से सम्बद्ध उपकारक ग्रन्थों का समावेश 6. वैदिक व्याकरण का तुलनात्मक अध्ययन 7. उपसंहार एवं सन्दर्भ ग्रन्थ सूची।

509. ज्योत्स्ना

व्याकरणशास्त्र के अनुसार प्रमाणों की समीक्षा।

निर्देशक : डॉ. सत्यपाल सिंह

Th 18886

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध में व्याकरणशास्त्र से इतर आस्तिक दर्शनसम्प्रदाय सांख्य-योग,

न्याय-वैशेषिक, मीमांसा-वेदान्त एवं नास्तिक परम्परा में बौद्ध, जैन और चार्वाक् दर्शनों में विद्यमान प्रमाणों के स्वरूप एवं संख्या पर विचार किया गया है। वैयाकरणों के मत में प्रमाण के सामान्य स्वरूप का विवेचन किया गया है। प्रत्यक्ष प्रमाण के लक्षण, प्रत्यक्ष का उत्पत्तिक्रम, प्रत्यक्ष प्रमाण के घटकतत्त्वों इन्द्रिय, विषय एवं इन्द्रिय और विषय के सम्बन्ध का विवेचन किया गया है । वैयाकरणों के मत में प्रत्यक्ष प्रमाण के भेद सविकल्पक प्रत्यक्ष और निर्विकल्पक प्रत्यक्ष पर विचार किया गया है। वैयाकरणों की अनुमान प्रमाणविषयक स्वीकार्यता पर विचार किया गया है। शब्द और अर्थ में विद्यमान तादात्म्यसम्बन्धरूपा शब्दशक्ति एवं उसके भेदों अभिधा, लक्षणा और व्यंजना पद और पदार्थ में विद्यमान तादात्म्यसम्बन्ध रूपा शब्दशक्ति केवल साधु शब्दों में ही विद्यमान होती है अथवा अपशब्दों में भी विद्यमान होती है। और शाब्दबोध के कारण शब्द के स्वरूप एवं उसके सहकारी कारणों आकाङ्क्षा, योग्यता एवं सन्निधि पर विचार किया गया है। वैयाकरणों के अनुसार अर्थापत्ति प्रमाण के भेद दृष्टार्थापत्ति एवं श्रुतार्थापत्ति का विवेचन किया गया है। व्याकरणशास्त्र में विद्यमान उपमान प्रमाण और अभाव प्रमाण के स्वरूप का विवेचन किया गया है।

विषय सूची

1. व्याकरणेतर भारतीय दर्शन परम्परा में प्रमाण विचार 2. व्याकरणशास्त्र में प्रत्यक्ष प्रमाण का विचार 3. व्याकरणशास्त्र में अनुमान प्रमाण पर विचार 4.व्याकरणशास्त्र में शब्द प्रमाण पर विचार 5. व्याकरणशास्त्र में अर्थापत्ति प्रमाण पर विचार 6. व्याकरणशास्त्र में उपमान और अभाव प्रमाणों पर विचार 7. शोध निष्कर्ष। सन्दर्भ ग्रन्थ सूची।

510. जैन (प्रियंका)

पराशरोक्त ज्योतिषशास्त्रीय योगायोग विमर्श।

निर्देशक : प्रो. देवेन्द्र मिश्र एवं डॉ. सुषमा चौधरी

Th 18861

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध में ऋषि शब्द का परिचय दिया गया है और महर्षि पराशर का जीवन वृत्त प्रस्तुत किया गया है। राजयोग शब्द का परिचय तथा वर्त्तमान समय में इसका स्वरूप स्पष्ट किया गया है। इसमें मण्डलेश्वर शब्द को स्पष्ट करते हुए

वर्तमान प्रशासनिक व्यवस्था के सन्दर्भ में मण्डलेश्वर पद के स्वरूप को स्पष्ट किया गया है । सम्प्रदाय शब्द को स्पष्ट किया गया है तथा वर्तमान सन्दर्भ में इसके स्वरूप तथा विस्तार को प्रस्तुत किया गया है। महर्षि पराशर की रचनाओं में प्राप्त विभिन्न सुयोगों का अध्ययन किया गया है। कुयोग शब्द का अर्थ को स्पष्ट किया गया है। कुयोगों के सन्दर्भ में दारिद्रय योग, संतानहीनता योग, कुष्ठ योग, नपुसंकता योग, क्षय रोग योग, गण्डमाला योग, गूंगापन योग आदि योगों का संग्रह किया गया है। इन योगों के प्रस्तुतिकरण हेतु सर्वप्रथम पराशरोक्त कुयागों को प्रस्तुत किया गया है।

विषय सूची

1. महर्षि पराशर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व 2. महर्षि पराशरोक्त राजयोगों का अध्ययन 3. महर्षि पराशरोक्त मण्डलेश्वर योगों का अध्ययन 4. महर्षि पराशरोक्त सम्प्रदाय प्रवर्त्तक योगों का अध्ययन 5. महर्षि पराशरोक्त राज्यपूज्यता आदि सुयोगों का अध्ययन 6. महर्षि पराशरोक्त कुयोगों का अध्ययन 7. निष्कर्ष एवं सन्दर्भ ग्रन्थ सूची।

511. जैन (पूजा)

जैन संस्कृत पुराणों में ज्योतिष परम्परा।

निर्देशिका : डॉ. पुनीता शर्मा

Th 18879

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध में जैन धर्म की पृष्ठभूमि व अर्थ, तीर्थकरों की परिभाषा, संख्या, नाम व काल, ऋग्वेद से पौराणिक काल तक जैन धर्म का विकास क्रम व संस्कृति भाषा में लिखे गए जैन पुराणों की संख्या तथा उनका पूर्ण विवरण दिया गया है। इसमें ज्योतिष शास्त्र की पृष्ठभूमि, अर्थ व क्रमिक विकास के साथ इसके प्रवर्त्तक आचार्य व स्कन्ध, जैनाचार्यों की दृष्टि में ज्योतिष के स्कन्ध, ज्योतिष देव, ज्योतिष चक्र व ज्योतिष पटल तथा जैन संस्कृत पुराणों में वर्णित ज्योतिष-तत्वों के मुख्य माध्यमों का उल्लेख किया गया है। इसमें खगोल विज्ञान की पृष्ठभूमि, जैनाचार्यों का इसके विकास में योगदान तथा जैन संस्कृत पुराणों के परिप्रेक्ष्य में खगोलीय तत्त्वों में गणनाओं का वर्णन करते हुए इनमें उपलब्ध ग्रह, नक्षत्र, ग्रहण, उल्का, काल व काल की ईकाईयाँ, तिथ, पक्ष, मास, योग, ऋतु, संवत्सर व मुहूर्त्त तथा मन्त्र व तपोवास आदि चिकित्सा उपायों का विवेचन किया गया है। जैन ज्योतिष का विस्तृत सार दिया गया है।

विषय सूची

1. जैन धर्म की प्राचीन एवं जैन पुराण परम्परा 2. ज्योतिष शास्त्र एवं जैन पुराण। 3. जैन संस्कृत पुराणों में खगोलीय तत्त्व, गणनायें व चिकित्सा उपाय 4. फलित ज्योतिष के सम्प्रत्यय व जैन पुराण 5. जैन संस्कृत पुराणों में प्रश्न व शकुन शास्त्र 6. उपसंहार एवं सन्दर्भ ग्रन्थ सूची।

512. झा (अमर जी)

वाक्यपदीय के क्रिया, काल, पुरूष, संख्या तथा उपग्रह समुद्दशों का आधुनिक संदर्भ में महत्त्व।

निर्देशक : प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज एवं डॉ. प्रदीप कुमार दास

Th 18884

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध में व्याकरणदर्शन तथा आधुनिक भाषाविज्ञान का परिचय दिया गया है। तदनन्तर महान वैयाकरण, दार्शनिक तथा भाषावैज्ञानिक भर्तृहरि के व्यक्तित्त्व एवं कर्तृत्व पर चर्चा की गयी है। क्रिया के समानार्थक शब्दों की परिभाषा एवं अर्थों का विश्लेषण कर तुलना की गयी है। काल तथा इसके समानार्थक पदों का परिचय देते हुए प्राचीन वाङ्मय ऋग्वेद, अथर्ववेद, उपनिषद् साहित्य, महाभारत, गीता तथा पुराण में प्रतिपादित बह्म के रूप में काल का वर्णन किया गया है। पुरूष का सामान्य परिचय व पुरूषविषयक पूर्वाचार्यों के मत को उद्धृत किया गया है। संख्या तथा इसके समरूप शब्द Number का कोषगत अर्थ-विवेचन किया गया है। वैदिक वाङ्मय से आचार्य भर्तृहरिपर्यन्त संख्या विषयक मतों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। उपग्रह शब्द की व्युत्पत्ति एवं सामान्य परिचय के साथ पूर्ववर्ती वैयाकरणों द्वारा प्रदत्त उपग्रह पद की परिभाषा उदधृत की गयी है। वाक्यपदीय के उपग्रह समुद्देश में भर्तृहरि विवेचित उपग्रह के स्वरूप को विस्तार से उद्घाटित किया गया है।

विषय सूची

1. भर्तृहरि का व्यक्तित्त्व, कर्तृत्व एवं अवदान 2. क्रिया समुद्देश का आधुनिक संदर्भ में महत्त्व 3. काल समुद्देश का आधुनिक संदर्भ में महत्त्व 4. पुरूष समुद्देश का आधुनिक संदर्भ में महत्त्व 5. संख्या समुद्देश का आधुनिक संदर्भ में महत्त्व 6. उपग्रह समुद्देश का आधुनिक संदर्भ में महत्त्व 7. उपसंहार एवं सन्दर्भ ग्रन्थ सूची।

513. प्रमिता

जीवगोस्वामी प्रणीत गोपालचम्पू का दार्शनिक अध्ययन।

निर्देशक : प्रो. रमेशचन्द्र भारद्वाज एवं प्रो. मदनमोहन अग्रवाल

Th 18883

सारांश

शोधप्रबन्ध में कवि श्रीजीवगोस्वामी का परिचय दिया गया है। इसमें दार्शनिक अध्ययन के अन्तगर्त दर्शनशास्त्र के प्रमुख विषयों से सम्बद्ध तत्त्व, का वर्णन दिया गया है। गोलोक निरूपण में चारों पुरूषार्थों का वर्णन करते हुए भक्ति को प्रमुख स्थान दिया गया है। श्रीगोपालचम्पू में प्राप्त दार्शनिक तत्त्वों में ब्रह्म, जीव और जगत् का उल्लेख किया गया है। आद्योपान्त ग्रन्थ में भक्ति का निरूपण ही प्रधान है अतः अनिवार्य रूप से देने और उपेक्षित न किये जो सकने वाले उद्धरणों के माध्यम से चम्पूकार के भक्ति-मत का प्रतिपादन किया गया है। श्रीजीवगोस्वामी के श्रीगोपालचम्पू नामक चम्पूकाव्य का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण दार्शनिक अध्ययन किया गया है।

विषय सूची

1. श्रीजीवगोस्वामी का व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व 2. वैष्णवधर्म एवं जीवगोस्वामी 3. श्रीगोपालचम्पू में मुख्य दार्शनिक तत्त्व 4. श्रीगोपालचम्पू में साधनतत्त्व : भक्ति 5. गोपालचम्पू में साध्यतत्त्व : मुक्ति 6. श्रीगोपालचम्पू एवं अद्वैतवेदान्त 7. उपसंहार एवं सन्दर्भ ग्रन्थ सूची।

514. रमण कुमार

द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग विराजित मंदिरों में वास्तु विनियोग।

निर्देशक : प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज एवं प्रो. देवेन्द्र मिश्र

Th 18885

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध में सभी राज्यों तथा संबंधित जिलों जहां शिव के द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग मंदिर स्थित हैं का संक्षिप्त भौगोलिक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। शैवधर्म के उद्‌भव विकास, शैवधर्म के सिद्धान्त, शैव सम्प्रदाय, पुनः भारत में कला की प्राचीनता, कला की विशेषता आदि का विस्तृत विवेचन किया गया है। मंदिर का अर्थ, उपादेयता,

मंदिरों के उत्पत्ति विषयक सिद्धान्त, शिखरों का उद्‌भव आदि तत्त्वों का विस्तृत विश्लेषण किया गया है। इनमें मंदिर का निर्माता, इतिहास एवं धार्मिक पृष्ठभूमि के साथ-साथ ज्योतिर्लिङ्ग मंदिर का वास्तुशास्त्रीय विवेचन किया गया है। ज्योतिर्लिङ्ग मंदिरों का ऐतिहासिक एवं वास्तुशास्त्रीय विवेचन किया गया है। दक्षिण भारत में विराजित ज्योतिर्लिङ्ग मंदिरों का इतिहास एवं वास्तुशास्त्र की दृष्टि से अध्ययन किया गया है। पश्चिम भारत में विराजित ज्योतिर्लिङ्ग मंदिरों की वास्तुकला का ऐतिहासिक विवेचन एवं वास्तुशास्त्रीय विनियोग को दर्शाया गया है। मध्य भारत में विराजित ज्योतिर्लिङ्ग में इतिहास एवं वास्तुकला के प्रभाव को दर्शाया गया है।

विषय सूची

1. द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग विराजित स्थलों का भौगोलिक विवेचन 2. भारत में शैव धर्म एवं कला 3. मंदिर वास्तुकला का विवेचन 4. उत्तर भारत में विराजित ज्योतिर्लिङ्ग मन्दिर की वास्तुकला 5. उत्तर-पूर्व भारत में विराजित ज्योतिर्लिङ्ग मन्दिरों की वास्तुकला 6. दक्षिण भारत में विराजित ज्योतिर्लिङ्ग मंदिरों की वास्तुकला 7. पश्चिम भारत में विराजित ज्योतिर्लिङ्ग मंदिरों की वास्तुकला 8. मध्य भारत में विराजित ज्योतिर्लिङ्ग मंदिरों की वास्तुकला 8. उपसंहार, परिशिष्ट एवं संदर्भ ग्रन्थ सूची।

515. शर्मा (कल्पना)

डॉ. वेङ्कट राघवन् के रूपकों का नाट्यशास्त्रीय अध्ययन।

निर्देशिका : डॉ. सुनीता गुप्ता, प्रो. शकुन्तला पुंजानी एवं डॉ. शशि तिवारी

Th 18880

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध में डॉ. राघवन् का जन्म, अध्ययन-अध्यापन, पारिवारिक जीवन, इनकी संस्कृत तथा संस्कृतेतर कृतियों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। इसमें रूपक, रूपक विधा, वस्तु एवं वस्तु भेद, नेता, रस एवं वस्तु को व्यावहिरक बनाने हेतु अर्थप्रकृतियों, कार्यावस्थाओं, सन्धि एवं सन्ध्याङ्गो का विविध नाट्यशास्त्रीय ग्रन्थों के आधार पर वर्णन किया गया है। डॉ. राघवन् के रूपकों की विस्तृत कथावस्तु, रूपक की विधा निर्धारण, कथावस्तु के स्त्रोत, रूपकों के नामकरण का आधार, रूपकों में प्राप्त अर्थप्रकृतियाँ, कार्यावस्था, सिन्ध एवं सन्धयङ्गों की विवेचना की गई है। डॉ. वेङ्कट राघवन् के रूपकों के प्रमुख पात्रों का शास्त्रीय रूप चरित्र-चित्रण एवं पात्रों

के नामकरण की परिकल्पना पर प्रकाश डाला गया है। इनके रूपकों में प्राप्त रस के कतिपय-स्थल एवं रसोत्कर्ष में सहायक तत्त्व यथा नाट्यालंकार एवं नाट्यलक्षण, नाट्यवृत्ति, अलंकार, छन्द एवं इनके समुच्चय से स्वतः निर्मित इनकी भाषा शैली का समाकलन किया गया है। इसमें नाट्यरूढ़ियों अर्थात पूर्वरंग, प्ररोचना, प्रस्तावना, आर्थोपक्षेपकों, स्वगत प्रयोग, एकोक्ति, भरतवाक्य को प्रस्तुत किया गया है। नाट्य प्रस्तुति के विविध पक्षों निर्देशक, रंगमंच, रंग संस्कार, वेशभूषा, पात्रचयन, रंगदीपन, अभिनय, संगीत का विश्लेषण किया गया है।

विषय सूची

1. डॉ. वेकंट राघवन् का व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व 2. नाट्य-तत्त्व (प्राचीन एवं आधुनिक परिप्रेक्ष्य में) 3. डॉ. वेकंट राघवन् के रूपकों में वस्तु-विवेचन 4. डॉ. वेकंट राघवन् के रूपकों में पात्र-योजना 5. डॉ. वेकंट राघवन् के रूपकों में रस योजना 6. डॉ. वेकंट राघवन् के रूपकों में नाट्य रूढ़ियाँ 7. डॉ. वेकंट राघवन् के रूपकों का रंगमंचीय विवेचन 8. निष्कर्ष एवं सन्दर्भ ग्रन्थ सूची ।

516. सोमवीर

श्लोकवार्त्तिक एवं तन्त्रवार्त्तिक में भाषातत्त्व का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

निर्देशक : डॉ. श्रीवत्स, डॉ. ओमनाथ बिमली एवं डॉ. मिथिलेश चतुर्वेदी

Th 18878

सारांश

शोध प्रबंध में मीमांसा का अर्थ, मीमांसा दर्शन का इतिहास व परम्परा, मुमारिलभट्ट का जीवन परिचय, कृतियां - श्लोकवार्त्तिक, तन्त्रवार्त्तिक, टुप्टीका तथा भाषातत्त्व सम्बन्धी विवेचना को प्रस्तुत किया गया है। इसमें शब्दाभिव्यक्ति के साधन, शब्दाभिव्यक्ति की प्रक्रिया, व्याकरणदर्शनानुसार शब्द का स्वरूप, शब्द प्रमाण, मीमांसा की दृष्टि में शब्द प्रमाण, कुमारिल मत में शब्द प्रमाण, वैयाकरणों का स्फोट सिद्धान्त तथा कुमारिलभट्ट द्वारा स्फोटवाद पर आक्षेप आदि विषयों पर गहन अध्ययन किया गया है। व्याकरण दर्शन में पदार्थ : जाति व्यक्ति विचार, जातिवादी वाजप्यायन, व्यक्तिवादी व्याडि, पाणिनि मत, कात्यायन और पतंजलि का समन्वयवादी दृष्टिकोण, भर्तृहरि मत, न्याय वैशेषिक मत में पदार्थ, जाति-व्यक्ति विचार, जाति और उपाधि में भेद, जातिबाधक हेतु तथा मीमांसा दर्शन आदि विषयों पर आलोचनात्मक अध्ययन

किया गया है। वाक्य स्वरूप विचार, वाक्य के अनिवार्य तत्त्व, योग्यता, आकांक्षा, सन्निधि (आसत्ति) की विवेचना के साथ वाक्यार्थ स्वरूप विचार, वैयाकरणों के मत में वाक्यार्थ-प्रतिभा, कुमारिल मत 'संसर्गो वाक्यार्थः', प्रभाकर मत- 'संसृष्टों वाक्यार्थः', वाक्या और वाक्यार्थ में सम्बन्ध, शक्तिवाद, वाक्ययस्य वाक्यार्थ लक्षणाः भाट्टमत आदि बिन्दुओं पर सूक्ष्म चिन्तन किया गया है। इसमें शाब्दबोध की परिभाषा, शाब्दबोध की प्रक्रिया, शाब्दबोध का आकार नैयायिकों के अनुसार शाब्दबोध, शाब्दबोध के कारण स्वतस्त्व और परतस्त्व आदि विषयों का गहराई से अध्ययन किया गया है। मीमांसादर्शन में महावाक्य का स्वरूप, महावाक्य की अवधि, महावाकय एवं अवान्तर वाक्यों का प्रामाण्य, महावाक्य में वाक्यैकवाक्यता के निमित, महावाक्यार्थ बोध, महावाक्यार्थ विचार का अध्ययन को प्रस्तुत किया गया है।

विषय सूची

1. विषय प्रवेश - मीमांसादर्शन एवं भाषातत्त्वं 2. शब्द-विचार 3. अर्थ विचार 4. वाक्य एवं वाक्यार्थ विचार 5. शाब्दबोध की प्रक्रिया एवं स्वरूप 6. महावाक्यार्थ विचार 7. उपसंहार एवं सन्दर्भ ग्रन्थ सूची।

M.Phil Dissertations

517. अग्रवाल (निधि)
जैनेन्द्र धातुपाठ का समीक्षात्मक अध्ययन।
निर्देशिका : डॉ. शन्नो ग्रोवर

518. अरुण कुमार दीप
आचार्य विनयविजय गणि के हैमप्रकाशमहाव्याकरण के कारक-प्रकरण का समीक्षात्मक अध्ययन।
निर्देशक : डॉ. पतंजलि कुमार भाटिया

519. आनन्द
वाक्यपदीय की अम्बाकर्त्री टीका का समीक्षात्मक अध्ययन : द्रव्यसमुद्देश एवं भूयोद्रव्यसमुद्देश के सन्दर्भ में।
निर्देशक : डॉ. श्रीवत्स

520. आर्य (विजेन्द्र कुमार)
वाक्यपदीयगत लिङ्गसमुद्देश पर अम्बाकर्त्री का विवेचनात्मक अध्ययन।
निर्देशक : डॉ. सन्ध्या राठौर

521. खत्री (प्रोमिला)
धर्मशास्त्र में उपभोक्ता-संरक्षण के प्रति संचेतना।
निर्देशक : डॉ. आशुतोष दयाल माथुर

522. चन्द्रगुप्त भारतीय
श्रीमद्भगवद्गीता का दारा शुकूह कृत फ़ारसी अनुवाद : एक अध्ययन।
निर्देशक : डॉ. बलराम शुक्ल

523. धर्मपाल
सरस्वतीकण्ठाभरण में समास-विवेचन।
निर्देशक : डॉ. ओमनाथ बिमली

524. पाण्डेय (प्रीती)
आचार्य पट्टाभिरामशास्त्री कृत अर्थालोक टीका का समीक्षात्मक अध्ययन : विनियोग विधि के विशेष सन्दर्भ में।
निर्देशक : प्रो. रमेश भारद्वाज

525. मिश्र (चन्दन कुमार)
गुप्तोत्तरकालीन अभिलेखों का भाषाशास्त्रीय अध्ययन : उत्तरगुप्त, मौखरी, मैत्रक, वर्द्धन।
निर्देशिका : डॉ. पूर्णिमा कौल

526. योगेश कुमार
विमल-यतीन्द्रम् का नाट्यशास्त्रीय अध्ययन।
निर्देशक : डॉ. मीरा द्विवेदी